DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)

B.A PART-I (HONS:-) LECTURE NO. 10 MO- 9415376545

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Date 23/04/2020

राज्य की उत्पत्ति का शक्ति सिद्धान्त

समय-समय पर राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में नाना विध सिद्धान्त प्रतिपादित किये जाते रहे। यद्यपि शक्ति-सिद्धान्त का औचित्य उतना नहीं रह गया है, फिर भी राजनीति दर्शन में अपने युग में इसका विशेष महत्व रहा। और राज्य की उत्पत्ति के सन्दर्भ को समझने में इसने विशेष सहायता की। दैवीय उत्पत्ति सिद्धान्त और सामाजिक अनुबन्ध सिद्धान्त के अतिरिक्त राज्य की उत्पत्ति का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त शक्ति-सिद्धान्त है।

शक्ति-सिद्धान्त का अर्थ – राज्य की उत्पत्ति शक्ति के द्वारा हुई है। शक्ति ही राज्य का आधार है। राज्य शक्ति द्वारा उत्पन्न हुआ है। और शक्ति के दम पर ही टिका हुआ है। प्राचीन काल में जहाँ-तहाँ घूमते हुए व्यक्तियों में शक्तिशाली व्यक्ति अपनी शक्ति के कारण अपने समूह या कबीले का स्वामी बन गया और उसने कबीले में व्यवस्था उत्पन्न की। कबीला उसकी आज्ञा का पालन करने लगा। और शक्ति ही कानून का स्रोत भी बन गया।

मनुष्यों के दायरे बड़े होते गए। कबीलों में आपस में संघर्ष होता गया। कमजोर कबीले पराजित होते गए। शक्तिशाली कबीले अपने स्वामी के नेतृत्व में अन्य कबीलों को परास्त करते गए। और इस तरह वह उन कबीलों का स्वामी बन गया। जीते हुए कबीलों का स्वामी राजा बन गया और इस तरह राज्य का जन्म हुआ। शक्ति द्वारा राज्य की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए विचारक लीकॉक कहते हैं कि "ऐतिहासिक रूप से इसका अभिप्राय है कि शासन मानव आक्रमण का परिणाम है; राज्य का जन्म एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य को गुलाम बनाना तथा एक निर्बल कबीले पर एक बलशाली कबीले की विजय से हुआ। साधारणतः श्रेष्ठ सैनिकशक्ति द्वारा जिस किसी व्यक्ति ने अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए दूसरे पर अधिकार जमाया। उसी से राज्य-सत्ता का उदय हुआ। इसी तरह कबीले से राज्य और राज्य से साम्राज्य का धीरे-धीरे विकास हुआ।"

PTO

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO - 9415376545
B.A PART-I (HONS.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................. Date 23/04/2020

शक्ति सिद्धान्त का विकास—

(1) यूनानी दर्शन में शक्ति के सिद्धान्त — प्लेटो और अरस्तू से पूर्व भी यूनान के दर्शन जगत पर 'सोफिस्ट' छाए हुए थे। और ये सभी 'सोफिस्ट' यथार्थवादी थे। ये लोग मानते थे कि शक्ति ही न्याय है और शक्ति ही सत्ता का स्रोत है। प्रसिद्ध सोफिस्ट थ्रेसीमेकस ने कहा था कि- "शक्तिशाली व्यक्ति का हित ही न्याय है। शक्तिशाली व्यक्ति की आज्ञा ही न्याय है।"

(2) प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में शक्ति सिद्धान्त — प्राचीन भारतीय ग्रन्थ 'ऐतरेय ब्राह्मण', 'तैत्तिरीय ब्राह्मण' में राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त में शक्ति सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है। प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित राज्य की उत्पत्ति के शक्ति-सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए डॉ० सिन्हा ने अपनी पुस्तक 'द डेवेलपमेंट ऑफ इंडियन पालिटी' में लिखा है कि "जब आर्यजन निश्चित भूभाग पर रहने लगे तो उन्हें उस भूमि से अवश्य ही प्रेम उत्पन्न हुआ होगा। उस प्रेम के साथ उसमें आदिवासियों के प्रति घृणा और अपने वर्ण और विजित प्रदेश के रक्षण के लिए गहरी चिन्ता उत्पन्न हुई होगी। इस प्रकार आर्यों के मन में उसी भूमि के प्रति जहाँ के वे निवासी थे, एक सुदृढ़ भावना पैदा हुई होगी, क्योंकि वह उस भूमि से हटना नहीं चाह सकते थे, इस भावना में जिसे प्रतिरक्षा और आक्रमण की आवश्यकता ने अधिक सुदृढ़ बनाया होगा। प्रारंभिक राजनीतिक चेतना का रूप धारण किया होगा और इस प्रकार प्रथम राज्य जिसे वैदिक आर्यों ने राष्ट्र कहा, उत्पन्न हुआ होगा।"

(3) चर्च के विद्वानों के अनुसार शक्ति सिद्धान्त — मध्य युग में यूरोपीय चिन्तन में चर्च की सत्ता हावी रही। धर्म और राज्य में संघर्ष होता रहा। और दो-तीन शताब्दियों तक धर्म अथवा चर्च, राजा और राज्य पर हावी रहा। इस समय भी चर्च के

PTO

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376545

B.A PART-I (HONS.)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Date. 23/04/2020

प्रवक्ताओं ने शक्ति के महत्व को स्वीकार किया और उसकी निन्दा भी की। तेरहवीं शताब्दी के बाद पूरी तरह से चर्च पराजित हो गया और उसे तब यह और अच्छी तरह विदित हुआ कि शक्ति का महत्व क्या है? पोप ग्रेगरी सप्तम ने इससे पूर्व ही लिखा था "हममें से कौन इस बात से अपरिचित है कि राजाओं और सामन्तों की उत्पत्ति उन क्रूर आत्माओं में से है जो परमात्मा को भूलकर उद्दंडता, लूट-मार, कपट, हत्या और प्रत्येक अपराध से संसार के शासक के रूप में बुराई का प्रसार करते हुए अपने साथी मनुष्यों पर मदांधता और असहनीय धारणा के साथ राज्य करते रहे हैं।"

(4) शक्ति-सिद्धान्त की व्यक्तिवादी विचारधारा — व्यक्तिवादी विचारकों ने भी राज्य को शक्ति और हिंसा पर आधारित बताया। स्पेंसर ने कहा है कि राज्य नित्य प्रति हिंसा का प्रयोग करता है और मानव स्वतंत्रता का हनन करता है इसलिए राज्य एक बुराई है परन्तु क्योंकि राज्य एक ऐसी बुराई है जिसके बिना काम नहीं चल सकता। अतः राज्य एक आवश्यक बुराई है, इसलिए सबसे अच्छा उपाय यही है कि राज्य के अन्दर बुराई के तत्व कम से कम विद्यमान हों। अर्थात राज्य की कार्यक्षेत्र अत्यन्त सीमित किया जाय। इसलिए व्यक्तिवादी लेखक फ्रीमैन ने कहा है "सबसे अच्छा वही है जो कम-से-कम शासन करे।"

(समाप्त)

continue till next Date

PTO

Scanned with CamScanner